शिक्षा में उपभोग की रणनीतियों का उल्लेख कीजिए।

अवधारणा-

चूँकि शिक्षा का सम्बन्ध ज्ञान से है और ज्ञान का सम्बन्ध उत्पादकता से लिया जाने लगा है। मानव शक्ति का विकास, औद्योगिक विकास तथा श्रम शक्ति का प्रतिफल ही पूँजी की उत्पादकता में वृद्धि करता है। अत: शिक्षा वर्तमान में एक उपभोग की वस्तु मानी जाने लगी है। प्राचीन समय में शिक्षा का सम्बन्ध ज्ञान-मोक्ष से लगाया जाता था, परन्तु वर्तमान में पूँजी अर्जन से लगाया जाता है अतः शिक्षा भवन पर व्यय, फर्नीचर पर व्यय एवं शिक्षा के विभिन्न मदों पर व्यय भी एक निवेश है तथा उससे प्राप्त धन पूँजी अर्जन तथा उपभोग है। अर्थात उपभोग के अन्तर्गत मनुष्य की आवश्यकताओं और धन के प्रयोग द्वारा उनकी संतुष्टि का अध्ययन होता है। शिक्षा अर्थशास्त्र की दृष्टि में मानव के समस्त प्रयत्नों का जन्म आवश्यकताओं और उनको संतुष्ट करने की प्रबल वासना से होता है। उपभोग इस प्रकार के समस्त आर्थिक प्रयत्नों एवं उनके द्वारा उत्पन्न धन का उद्देश्य होता है। अत: उपभोग को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।

"मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष संतुष्टि के लिये वस्तुओं और सेवाओं की उप्योगिता के प्रयोग को उपभोग कहते हैं।"

इस प्रकार से कह सकते है कि-

(1) शिक्षा भी उपभोग मानी जाती है क्योंकि शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अपने जीवन की प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा करता है। क्योंकि शिक्षा ही वह कल्पतरु है जिससे उसे धन की प्राप्ति होती है और धन द्वारा वह अपनी सभी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि के लिये वस्तुओं की आवश्यकता होती जो शिक्षा द्वारा प्राप्त होती है। यही नहीं सेवाओं की उपयोगिता का प्रयोग भी इसी के माध्यम से होता है।

(2) उपभोग केवल वस्तुओं का ही नहीं होता वरन् सेवाओं का भी उपभोग होता है। जैसे जब अध्यापक विद्यार्थी को पढ़ाता है तो विद्यार्थी अध्यापक की सेवाओं का उपभोग करता है।

आवश्यकताओं की तृप्ति के लिये पदार्थों एवं सेवाओं का प्रयोग (उपभोग) दो प्रकार का होता है-

(a) प्रत्यक्ष

(b) अप्रत्यक्ष

जब हम किसी वस्तु या सेवा का प्रयोग करके प्रत्यक्ष रूप में उसके तुष्टिगुण द्वारा संतुष्टि प्राप्त करते है तो वह उसका प्रत्यक्ष उपभोग हुआ। उदाहरण के लिये सर में दर्द होने पर एनासीन खाकर उसे दूर कर लेना। यहाँ पर एनासीन का प्रत्यक्ष उपभोग हुआ और जैसे कोयले का प्रयोग किसी मशीन को चलाने में किया जाए जो साबुन का निर्माण करती हो तो साबुन के उपयोग करने पर यहाँ पर कोयले कर अप्रत्यक्ष उपभोग हुआ। अन्त में कहा जा सकता है कि शिक्षा एक उपभोग है क्योंकि यह व्यक्ति का आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत वैयक्तिक विकास करती है। इसके द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

उपभोग की परिभाषाएँ

प्रो. एली के अनुसार- "विस्तृत अर्थ में मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये आर्थिक पदार्थों तथा व्यक्तिगत सेवाओं का प्रयोग ही उपभोग है।"

प्रो. मेयर के अनुसार- "वस्तुओं और सेवाओं का स्वतंत्र मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रत्यक्ष एवं अन्तिम प्रयोग ही उपभोग कहलाता है।"

पैसन के अनुसार- "आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष संतुष्टि कें लिये धन का प्रयोग करना उपभोग कहलाता है।"

उपभोग के लक्षण- उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर उपभोग के निम्न लक्षण उभकर सामने आते हैं।

1. उपभोग वस्तुओं का ही नहीं वरन् सेवाओं का भी होता है।
2. इससे मानवीय आवश्यकताओं की तृप्ति होती है।
3. इससे प्रत्यक्ष अथवा तात्कालिक संतुष्टि होती है।
4. उपभोग से वस्तुओं का तुष्टिगुण कम हो जाता है, परन्तु उनका विनाश नहीं होता है।

उपभोग के विभिन्न प्रकार-

शिक्षा खर्च आंशिक रूप से उपभोग है और आंशिक रूप से निवेश । मसग्रेव ने शिक्षा के उपभोग पहलू को स्वीकार करते हुये इसे दो भागों में विभाजित किया है-

(क) वर्तमान उपभोग- शिक्षा संस्थान में पढ़ने जाने का उल्लांस।

(ख) भविष्य उपभोग- भविष्य में पूरे जीवन को खुशी से बिताने की योग्यता, जो शिक्षा ने प्रदान की है।

समान्यतः उपभोग के कई रूप हो सकते हैं जैसे- आडम्बरी व्यय, अनुत्पादक, उत्पादक आदि। **शौप** ने उत्पादक उपशोग और लाभकारी उपभोग में अन्तर इस प्रकार दिया – उत्पादक उपभोग वह है जो निर्गत को बढ़ाकर अपनी कीमत पूर्ण या आंशिक रूप से अदा करें। लाभकारी उपभोग ऐसा प्रकार है, कि यदि यह घटता है तो अर्थव्यवस्था का निर्गत भी कम हो जाता है।

इसके अतिरिक्त भी उपभोग के अन्य प्रकार हैं। जो इस तरह से हैं-

1. अन्तिम तथा उत्पादक उपभोग- जब किसी वस्तु या सेवा का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप में आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिये किया जाता है तो उसे अन्तिम उपभोग कहा जाता है। इसके विपरीत जब हम किसी वाछित वस्तु के उत्पादन में अन्य वस्तु का प्रयोग करत हैं तो इसे उत्पादक उपभोग कहते हैं।

2.शीघ्र व मन्द उपभोग- जब किसी वस्तु का उपभोग एक ही बार में कर लिया जाता है तो उसे शीघ्र उपयोग कहते और जब कोई वस्तु कई दिन, मास, वर्ष तक प्रयोग में आने के बाद समाप्त होती है तो उसे मंद उपभोग कहते हैं।

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर सार रूप में यह कहा जा सकता है कि मानव कल्याण उत्पादन की मात्रा पर नहीं वरन् उपभोग पर निर्भर करता है। समाज को कितना आर्थिक सुख मिल रहा है, यह इस से बात नहीं जाना जा सकता है कि कितना उत्पादन हो रहा है बल्कि इस बात से जाना जा सकता है कि मनुष्य कितना और किस प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करते हैं। यदि मनुष्य अधिक और लाभप्रद वस्तुओं का उपयोग करते हैं तो हम कह सकते हैं कि उनका जीवन स्तर ऊँचा है और वे सुखी हैं। यह सब शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा सफलता की कुंजी है। यह भी देख गया है कि यदि किसी देश के निवासी अपनी आय का अपव्यय करते हैं तो उनके धनी होते हुए भी उनका आर्थिक कल्याण कम होता है। अत: स्पष्ट है कि उपभोग मानव कल्याण की माप भी है।

शिक्षाशस्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व

- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन
- राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता का सम्बन्ध | भारत में राष्ट्रीय एकता का संकट | निवारण हेतु कोठारी आयोग के सुझाव
- राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं | शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय
- मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन | Describe the role of family in the development of value education in Hindi
- मूल्य शिक्षा का अर्थ | मूल्य शिक्षा की आवश्यकता | मूल्य शिक्षा की अवधारणा
- भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है? | बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?
- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ | पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम
- भावात्मक एकता के लिए भावात्मक एकता समिति द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ | राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए उपाय | राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका
- भावात्मक एकता का अर्थ | भावात्मक एकता के स्तर | भावात्मक एकता के विकास में शिक्षा के कार्य | राष्ट्रीय एकता भावात्मक एकता के सम्बन्ध
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना क्या है? | शिक्षा किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने में सहायक हो सकती है? | अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के बाधक तत्वों का उल्लेख कीजिए।
- भारत में शिक्षा का भूमण्डलीकरण किस प्रकार गति प्राप्त कर रहा है? | भूमण्डलीकरण क्या है?
- संचार का अर्थ | संचार के प्रकार | मीडिया एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध | जनसंचार के साधनों का महत्व
- शैक्षिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र | scope of educational economics
- शिक्षा के अर्थशास्त्र के शिक्षण के उद्देश्य | Objectives of teaching economics of education in Hindi
- शिक्षा के अर्थशास्त्र की संकल्पना | भारत के अर्थशास्त्र की संकल्पना | Concept of semiology of education in Hindi
- शिक्षा के अर्थशास्त्र का क्षेत्र | विकासशील अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में शिक्षा के अर्थशास्त्र की भूमिका
- भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति | Nature of Indian economy in hindi

- अर्थव्यवस्था के प्रकार | Type of economy in hindi
- शिक्षा का निवेश तथा उपयोग के रूप में वर्णन | Description of education as investment and use in Hindi